क्यों लगता है पितृदोष

कारण और निवारण

भारतीय संस्कृति एवं समाज में अपने पूर्वजों एवं दिवंगत माता-पिता का स्मरण श्राद्धपक्ष में करके उनके प्रति असीम श्रद्धा के साथ तर्पण, पिंडदान, यज्ञ तथा भोजन का विशेष प्रावधान किया जाता है। वर्ष में जिस भी तिथि को वे दिवंगत होते हैं, पितृपक्ष की उसी तिथि को उन्हें विधि-विधान पूर्वक पूजा जाता है। इस अवधि में गया, गंगा, यमुना, नर्मदा, क्षिप्रा, प्रयाग, काशी, पुष्कर, कुरुक्षेत्र आदि धार्मिक स्थलों पर अथवा किसी भी सर-सरिता के तट पर श्राद्धकर्म करने की प्रथा प्रचलित है। पर्याप्त संख्या में श्रद्धालुजन उक्त पावन स्थलों पर जाकर अपने-अपने पितरों का श्राद्धकर्म करते हैं किन्तु जो नहीं जा सकते, वे अपने-अपने घरों में ही विधिवत् अपने पूर्वजों को अर्घ्य देकर तर्पण करते हैं, भोजन देते हैं, यज्ञ करते हैं तथा अपनी क्षमता के अनुसार ब्राह्मण भोजन कराते हैं। ऐसा नहीं करने पर पितृदोष लगता है, पितृ नाराज हो जाते हैं और शाप दे कर चले जाते हैं। पितृ दोष किन कारणों से लगता है और इनसे मुक्ति कैसे पाई जा सकती है?..देखिये...!!

जन्म एवं मृत्यु का रहस्य अत्यन्त गूढ़ है। वेदों में, दर्शन शास्त्रों में, उपनिषदों में एवं पुराणों में हमारे पूर्वाचार्यों ने इस विषय पर विस्तृत विचार किया है। श्रीमद् भागवत् एवं श्रीमद् भगवद् गीता में स्पष्ट रूप से बताया है कि जन्म लेने वाले की मृत्यु और मृत्यु को प्राप्त करने वालों का जन्म निश्चित है। भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं जन्म-मरण को एक ध्रुव सत्य माना है।

महर्षि कपिल ने भी कहा है-माता-पिता से उत्पन्न यह स्थूल शरीर है। उसके साथ ही वह त्रिगुणात्मक होने से तीन प्रकार के सूक्ष्म शरीर भी उत्पन्न होते हैं। मृत्यु आते ही माता-पिता द्वारा उत्पन्न स्थूल शरीर तो स्वयं के कारणों में विलीन हो जाता है परन्तु सूक्ष्म शरीर वैसा ही रहता है। उसकी निवृत्ति ब्रह्मज्ञान के बिना सम्भव नहीं है। जीवात्मा त्रिगुणात्मक होने के कारण सत्वगुणप्रधान होते हुए स्वयं से उच्च ऐसे देवयोनी में प्रवेश करता है एवं देवताओं के सानिध्य में निवास करता है। जब जीवात्मा रजोगुण प्रधान होते हैं तब वे मनुष्य योनी में उत्पन्न होते हैं और तमोगुण प्रधान हो वे पशु-पक्षी, पेड़-पौधे एवं पत्थर जैसी मूढ़ योनी में प्रविष्ठ होते हैं।

मनुष्य त्रिगुणात्मक होता है और इसमें जो गुण हो उसके अनुसार उसका कर्म और स्वभाव बनता है। जो सत्गुण प्रधान होते हैं वे देवताओं में श्रद्धा रखते हैं और उनकी आराधना करते हैं। रजोगुण प्रधान मनुष्य यक्ष और राक्षसों पर श्रद्धा रखते हैं और उनकी आराधना करते हैं। तमोगुण प्रधान मनुष्य भूत-प्रेत आदि पर श्रद्धा रखते हैं और उनकी सेवा करते हैं।

श्रीमद्भगवद् गीता में भी लिखा है- पूर्व जन्म-सम्बन्धी बातें अनेक सामायिकों में पढ़ने को मिलती हैं। उसमें मनुष्य को अपने पूर्व जन्म की बातों का स्मरण रहता है, यह बात सिद्ध होती है।

इस पूर्व जन्म के आधार पर कर्मकांड में श्राद्धादि का विधान करने में आया है। पुत्रादि द्वारा श्राद्ध जैसी क्रियाओं में दी हुई चीजें पितरों को प्राप्त होती हैं इस विषय में कईयों में संदेह है। अपने पूर्वज उनके कर्मानुसार किस योनी में उत्पन्न हुए हैं यह बात जब हमें मालूम नहीं होती तो उनको दी हुई वस्तुएं उस योनि में उन्हें कैसे प्राप्त होंगी? हमारे पूर्वज जिस योनी में उत्पन्न हुए हैं उसमें वहाँ उनके लिये उपयोगी वस्तुएं तो हम उन्हें देते नहीं हैं। जिन वस्तुओं को हम देते हैं वे ब्राह्मणों को दी जाती हैं और वे ही उनका उपभोग करते हैं। यह मानना भी सही है। इस जिज्ञासा का समाधान करना मुश्किल है। दुनियां में कई बातें ऐसी हैं जिनका

कोई प्रमाण न मिलते हुए भी उन पर विश्वास करना पड़ता है। व्यवहारिक उदाहरण इसके लिये हम ले सकते हैं- दवाईयों का। दवाई के किसी भी पैक पर उसका फॉर्मूला या कंटेन्ट्स लिखे रहते हैं किन्तु हमारे पास इस बात का कोई सबूत नहीं है कि जो दवा की गोली हम खा रहे हैं उसमें उसके पैक पर लिखे सभी कंटेन्स होंगे ही! यहाँ हम श्रद्धा से काम लेते हैं। वही बात हमें कर्मकांड के बारे में भी करनी चाहिये। श्रद्धा रखकर ही हम फलश्रुति की अपेक्षा करें। यदि कुछ भी नहीं हुआ तो नुकसान तो नहीं है न?

शास्त्रों में लिखा हुआ है और प्रत्यक्ष में भी देखने को मिलता है कि जब श्राद्ध कर्म करने के बाद उस मृतात्मा को भोजन न परोसते हैं तो कुछ क्षण पूर्व कहीं भी कौएं दिखाई न देने पर अचानक वे आ जाते हैं और भोजन खाते हैं। आज हम परकाया प्रवेश की बात करते हैं तो मृतात्मा किसी भी योनी में पुर्नजन्म लें फिर भी वह अपने वारिसों द्वारा किये श्राद्ध को स्वीकार करने के लिये लालायित रहते हैं और समय पर पहुँच जाते हैं।

जब समय-समय पर श्राद्ध व तर्पण आदि किये जाते हैं तो हमारे पूर्वज जिन्हें पित्तर भी कहा जाता है, सन्तुष्ट हो जाते हैं और हमें आशीर्वाद देते हैं। इसके विपरित यदि उनका श्राद्ध, तर्पण आदि नहीं किया जाता है, उन्हें श्रद्धापूर्वक याद नहीं किया जाता है तो वे नाराज हो जाते हैं और श्राप दे देते हैं। जिसे शास्त्रों में पितृदोष कहा जाता है।

पितृदोष क्या है?

'सीमा' एक ऐसा शब्द जिससे पूरी दुनियाँ जुड़ी हुई है और प्रभावित भी होती है। प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक प्राणी इस शब्द से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है, सभी की अपनी एक सीमा होती है, एक मर्यादा होती है। जब इस सीमा का, इस मर्यादा का उल्लंघन किया जाता है तो अहित ही होता है, बर्बादी ही होती है। उदाहरण के तौर पर जल को ही लीजिये, जब तक जल अपनी मर्यादा में है, अपनी सीमा में है हम सभी के लिये प्राण देने वाला है, परन्तु यदि जल अपनी सीमाओं को लांघकर समुद्र से निकलकर शहर में आ जाये, उसकी लहरें मकानों को ध्वस्त कर दें, तो क्या होगा? हवा, जब तक मध्यम रूप में बह रही है हमारी श्वासें चल रही हैं, परन्तु यदि हवा अपनी सीमाओं को लांघ जाये, अपनी मर्यादा छोड़ दे, अपना अनुशासन त्याग दे, तो क्या होगा? आँधी और तूफान, चारों ओर हाहाकार ही हाहाकार। अतः यह तो स्पष्ट है कि प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक प्राणी एक सीमा में, एक मर्यादा में है, अनुशासन में है तब तक ही वह सबके लिये उत्तम है। यह बात हमारे घर परिवार व धार्मिक संस्कारों पर भी लागू होती है। घर-परिवार के सदस्य सीमाओं का उल्लंघन करें, मर्यादा को ताक में रख दें तो क्या होगा, इस कारण परिवार के प्रत्येक सदस्य को कष्ट उठाना ही पड़ेगा। एक घर-परिवार का अनुशासन टूटेगा, मर्यादा भंग होगी तो इसका प्रभाव आस-पास के घरों में, मौहल्ले में और समाज पर भी निश्चित रूप से पड़ेगा। इसी प्रकार परिवार के मुखियां द्वारा जो सत्कर्म एवं दुष्कर्म किये जाते हैं उसका फल उसके बाद उसके पारिवारिक सदस्यों को भुगतना पड़ता है विशेषकर संतान को। यह फल अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी, यह तो उस मुखिया के किये गये कर्मों पर निर्भर करता है। यदि परिवार के मुखिया द्वारा अच्छे कार्य किये गये हैं तो निश्चित रूप से वह अपने परिवार को सम्पन्नता एवं प्रसन्नता दे पायेगा। यदि उसने अनैतिक एवं दुराचार ही किये हैं तो वह अपने परिवार को अपमान एवं घृणा के अतिरिक्त और क्या दे सकता है।

इस प्रकार के दुष्परिणाम ज्योतिष शास्त्र में पितृदोष के नाम से जाने जाते हैं। यह पितृदोष किसी पूर्वज द्वारा मर्यादा भंग करने से होते हैं। इनके कारण जातक आर्थिक संकट, विभिन्न कार्यों में बाधा, विवाहादि में रुकावटे, पारिवारिक झगड़े, अपमान, अपयश, दोषारोपण, पारिवारिक सदस्यों का बार-बार बीमार होना, आय न होना, व्यापार/व्यवसाय में घाटा होना, नौकरी आदि में बार-बार परेशानियां आना आदि दोष उत्पन्न होते हैं। पितृदोष के कारण घर के सदस्यों को स्वप्न में सर्प भी दिखाई दे सकते हैं।

पितृ दोषों को स्थूल रूप से छः भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है। पितृ दोष (1) गौत्र दोष (2) कुलदेवी दोष (3) डाकिनी, शाकिनी दोष (4) प्रेत दोष (5) क्षेत्रपाल दोष तथा (6) बैताल दोष।

पितृदोष है या नहीं?

अब बात आती है कि क्या सभी लोग पितृदोष से ग्रसित होते हैं या कुछ लोग। इसका पता कैसे लगाया जा सकता है? पितृदोष है या नहीं, जातक की जन्म कुण्डली देखकर पता लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त प्रश्न कुण्डली, मृत्यु कुण्डली एवं पद्मचक्र के माध्यम से भी पितृदोष का पता लगाया जा सकता है परन्तु प्रायः यह विधियां प्रचलन में नहीं है। मुख्य रूप से जन्म कुण्डली के द्वारा ही पितृदोष का निर्णय किया जाता है।

सूर्य आत्मा एवं पिता का कारक ग्रह है। पिता का विचार सूर्य से होता है। इसी प्रकार चन्द्रमा मन एवं माता का कारक ग्रह है। सूर्य जब राहु की युति में हो तो ग्रहण योग होता है। सूर्य का ग्रहण, अतः आत्मा, पिता का ग्रहण हुआ। सूर्य राहु की युति पितृ दोष का निर्माण करती है। सूर्य व चन्द्र अलग-अलग या दोनों ही राहु की युति में हो तो पितृदोष होता है। शनि सूर्य पुत्र है। यह सूर्य का नैसर्गिक शत्रु भी है। अतः शनि की सूर्य पर दृष्टि भी 'पितृ दोष' उत्पन्न करती है। इसी पितृ दोष से जातक आधि, व्याधि, उपाधि तीनों प्रकार की पीड़ाओं से कष्ट उठाता है। उसके प्रत्येक कार्य में अड़चन आती है। कोई भी कार्य सामान्य रूप से निर्विघ्न सम्पन्न नहीं होता। दूसरों की दृष्टि में जातक सुखी दिखाई पड़ता है परन्तु जातक आंतरिक रूप से दुःखी होता है। जीवन में कष्ट उठाता है। कष्ट किस प्रकार का होगा? इसका विचार एवं निर्णय सूर्य-राहु की युति अथवा सूर्य-शनि का दृष्टि सम्बन्ध या युति जिस भाव में हो रही है, उस पर निर्भर करता है।

उपरोक्त दी गई कुण्डली में देखिये पितृदोष पंचम भाव में है। यहाँ पर सूर्य राहु एवं शनि तीनों युति में है। बुध की इन ग्रहों से इस भाव में युति प्रयोजनहीन है। इससे पितृदोष पर अच्छा या खराब, कैसा भी प्रभाव नहीं पड़ रहा है। हाँ, द्वादशेश होने के कारण यह पंचम भाव को खराब अवश्य कर रहा है, यह जातक के लिये संतान उत्पन्न करने में बाधक बन रहा है।

इस प्रकार के पितृदोष निवारण के लिये 'ॐ सर्व पितृ मनोकामना सिद्ध कुरु-कुरु स्वाहा ॐ' मंत्र पाठ करते हुए तांबे के पात्र से पीपल के वृक्ष पर जल अर्पित करें। पीपल वृक्ष की प्रदक्षिणा करें। वहाँ पर दीप जलायें। पितृ स्तवन तथा विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।

कुण्डली में चतुर्थ भाव, नवम भाव तथा दशम भाव में सूर्य-राहु अथवा चन्द्र-राहु की युति से जो पितृदोष उत्पन्न होता है उसे श्रापित दोष कहते हैं। इसी प्रकार पंचम भाव में राहु-गुरु की युति से बना गुरु चांडाल योग भी प्रबल पितृ दोष कारक होता है। संतान भाव में इस दोष के कारण प्रसव कष्टकारक होता है।

आठवें या बारहवें भाव में स्थित गुरु प्रेतात्मा से पितृ दोष करता है। यदि इन भावों में राहु बुध की युति में हो तथा सप्तम, अष्टम भाव में राहु और शुक्र युति में हो तब भी पूर्वजों के दोष से पितृदोष होता है। यदि राहु-शुक्र की युति द्वादश भाव में हो तो पितृदोष का कारण स्त्री जातक से होता है। इसका कारण भी स्पष्ट है कि बारहवां भाव भोग एवं शैय्या सुख का स्थान है। अतः स्त्री जातक से

दोष होना स्वाभाविक ही है।

1. यदि कुण्डली में अष्टमेश राहु के नक्षत्र में तथा राहु अष्टमेश के नक्षत्र में स्थित हो तथा लग्नेश निर्बल एवं पीड़ित हो तो जातक पितृदोष एवं भूत-प्रेत आदि से शीघ्र प्रभावित होता है।
2. यदि जातक का जन्म सूर्य-चन्द्र ग्रहण में हो तथा घटित होने वाले ग्रहण का सम्बन्ध जातक के लग्न, षष्ठ एवं अष्टम भाव में बन रहा हो तो ऐसे जातक पितृदोष, भूत-प्रेत एवं अतृप्त आत्माओं के प्रभाव से पीड़ित रहते हैं। इन्हें मिर्गी, हिस्टीरिया इत्यादि के दौरे पड़ते रहते हैं।
3. यदि लग्नेश जन्म कुण्डली में अथवा नवांश कुण्डली में अपनी नीच राशि में स्थित हो तथा राहु, शनि, मंगल के प्रभाव से युक्त हो, तो जातक पितृदोष एवं अतृप्त आत्माओं का शिकार होता है।
4. यदि जन्म कुण्डली में अष्टमेश पंचम भाव में तथा पंचमेश अष्टम भाव में स्थित हो तथा चतुर्थेश षष्ठ भाव में स्थित हो और लग्न एवं लग्नेश पापकर्त्तरि योग में स्थित हो, तो जातक मातृशाप एवं अतृप्त आत्माओं से प्रभावित होता है।
5. यदि चन्द्रमा जन्म कुण्डली अथवा नवांश कुण्डली में अपनी नीच राशि में स्थित हो तथा चन्द्रमा एवं लग्नेश का सम्बन्ध क्रूर एवं पाप ग्रहों से बन रहा हो, तो जातक पितृदोष, प्रेतज्वर एवं अतृप्त आत्माओं से प्रभावित होता है।
6. यदि कुण्डली में चन्द्रमा एवं शनि की युति हो अथवा चन्द्रमा शनि के नक्षत्र में तथा शनि चन्द्रमा के नक्षत्र में स्थित हो, तो जातक ऊपरी हवा, पितृदोष एवं अतृप्त आत्माओं से शीघ्र प्रभावित होता है।
7. यदि लग्नेश जन्म कुण्डली में अपनी शत्रु राशि में निर्बल एवं दूषित होकर स्थित हो तथा क्रूर एवं पाप ग्रहों से युत हो तथा शुभ ग्रहों की दृष्टि लग्न भाव एवं लग्नेश पर नहीं पड़ रही हो, तो जातक पितृदोष, ऊपरी बाधा एवं अतृप्त आत्माओं से पीड़ित होता है।
8. यदि जातक का जन्म कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की सप्तमी के मध्य हुआ हो और चन्द्रमा अस्त, निर्बल एवं दूषित हो अथवा चन्द्रमा पक्षबल में निर्बल हो तथा राहु-शनि से युत एवं नक्षत्रीय परिवर्तन बना रहा हो, तो जातक अदृश्य कारणों से मानसिक उन्माद का शिकार होता है।
9. यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा-राहु का नक्षत्रीय परिवर्तन योग बन रहा हो तथा चन्द्रमा पर अन्य क्रूर एवं पाप ग्रहों का प्रभाव हो एवं लग्न एवं लग्नेश को शुभ ग्रह नहीं देखते हों, तो जातक अतृप्त आत्माओं का शिकार होता है।
10. यदि कुण्डली में चन्द्रमा राहु के नक्षत्र में स्थित हो तथा अन्य क्रूर एवं पाप ग्रहों का प्रभाव चन्द्रमा, लग्नेश एवं लग्न भाव पर हो तो जातक अतृप्त आत्माओं का शिकार होता है।
11. यदि कुण्डली में गुरु का सम्बन्ध राहु से हो तथा लग्नेश एवं लग्न भाव पापकर्त्तरि योग में हो, तो जातक को अतृप्त आत्माएं अधिक पीड़ित करती हैं।
12. यदि कुण्डली में बुध एवं राहु में नक्षत्रीय परिवर्तन हो तथा लग्नेश निर्बल होकर अष्टम भाव में स्थित हो, साथ ही लग्न एवं लग्नेश पर क्रूर एवं पाप ग्रहों का प्रभाव हो, तो जातक अतृप्त आत्माओं से पीड़ित मनोरोगी बन जाता है।
13. यदि कुण्डली में अष्टमेश लग्न में स्थित हो तथा लग्न भाव एवं लग्नेश पर अन्य क्रूर एवं पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो जातक अतृप्त आत्माओं का शिकार होता है।
14. यदि जन्म कुण्डली में राहु जिस राशि में स्थित हो उसका स्वामी निर्बल एवं पीड़ित होकर अष्टम भाव में स्थित हो तथा लग्न एवं लग्नेश पापकर्त्तरि योग में स्थित हो तो जातक ऊपरी हवा, प्रेतज्वर एवं अतृप्त आत्माओं का शिकार होता है।

इसके अतिरिक्त और भी कुण्डली में बहुत से योग होते हैं जिनके कारण जातक पितृदोष से ग्रसित होता है। पितृ दोष भी भांति-भांति के होते हैं इनमें पितृशाप, मातृशाप, प्रेतशाप आदि दोषों के कारण जातक को बहुत-सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। जब पितृगण नाराज हो जाते हैं तो वे श्राप दे देते हैं जिससे जातक का जीवन नर्क के समान हो जाता है। यदि पिता द्वारा श्राप दिया जाये तो वह पितृश्राप कहा जाता है, यदि माता द्वारा श्राप दिया जाये तो वह मातृश्राप कहा जाता है। इन दोषों का पता भी कुण्डली से ही लगाया जा सकता है। नीचे कुछ योगों का विवरण दिया जा रहा है जिन्हें देखकर आप स्वयं ही समझ सकते हैं किस प्रकार के योग होने पर किस प्रकार का दोष उत्पन्न होता है। ♦♦♦

जानें किस कर्म की सजा भुगतकर जन्म हुआ है?

जिस प्रकार सजा पूरी होने के बाद माता-पिता बच्चों को माफ करके गलती सुधारने का अवसर देते हैं उसी प्रकार भगवान भी पाप कर्मों की सजा पूरी होने पर वापस आत्माओं को शरीर में प्रवेश करके सद्कर्मों द्वारा मुक्ति पाने का मौका प्रदान करते हैं लेकिन जिन पाप कर्मों की सजा भुगत कर व्यक्ति वापस शरीर प्राप्त करता है उसका चिन्ह उसके शरीर पर मौजूद होता है।

भगवान विष्णु ने गरुड़ से कहा है कि जो व्यक्ति ब्रह्महत्या के कारण नर्क की सजा भुगतकर आते हैं उन्हें जीवन में क्षय रोग के कारण कष्ट भोगना पड़ता है। गाय को सताने वाला मूर्ख और कुबड़ होता है। कन्या की हत्या करने वाले व्यक्ति कोढ़ी होते हैं और इन्हें चाण्डाल योनियों में जाना पड़ता है।

झूठी गवाही के कारण नर्क की सजा भुगत कर आने वाला व्यक्ति गूंगा होता है। मांस खाने वाला व्यक्ति रोगी और बेचने वाले व्यक्ति का भाग्य साथ नहीं देता। इन्हें जीवन में बार-बार असफलताओं का सामना करना पड़ता है। सोने की चोरी के कारण नर्क की यातना भुगतकर आने वालों के नाखून अच्छे नहीं होते। अन्न की चोरी करने वाला चूहा बनता है।

दूसरों को दिए बिना स्वयं मिठाई खाने वाले व्यक्ति को कंठमाला नामक रोग होता है। जो व्यक्ति अभिमान के कारण गुरु का अपमान करता है उसे मिरगी की बीमारी होती है। पुस्तक चोरी के कारण नर्क से लौटा व्यक्ति जन्म से ही अंधा होता है। विष की चोरी करने वाला बिच्छू और सुगंधित पदार्थों को चुराने वाला छुछुंदर के रूप में जन्म लेकर पाप की सजा भुगतता है।

झूठ बोलकर दूसरों को नुकसान पहुंचाने वाला व्यक्ति इस जीवन में हकला और ब्राह्मण एवं गाय को लात मारने वाला लंगड़ा होकर पैदा होता है। शाग-सब्जियों को चुराने वाले को मोर योनी में जन्म लेना पड़ता है। गरुड़ पुराण में भगवान विष्णु कहते हैं कि जो व्यक्ति हिंसक कर्म करता है, जीवों की हत्या करता है, राहगीरों का धन लूटकर जीविका चलाते हैं ऐसा व्यक्ति नर्क में घोर यातना सहकर कसाई के घर बकरी के रूप में जन्म लेता है और कष्ट पूर्ण मृत्यु को प्राप्त करता है।

बिना निमंत्रण के जो व्यक्ति भोज में पहुंच कर खाना खाते हैं उनका जन्म कौए के रूप में होता है। जो योग्य व्यक्तियों को विद्यादान नहीं देते ऐसे व्यक्ति बैल बनकर भारी कष्ट पाते हैं। सासु को गाली देने वाली, नित्य कलह करने वाली स्त्री जोंक के रूप में जन्म पाती है। पति से कटु वचन कहने वाली स्त्री जूं योनी में जन्म लेती है।

■■■